𑀩𑁆𑀭𑀸𑀳𑁆𑀫𑀻 𑀮𑀺𑀧𑀺 𑀘𑀁𑀤𑁆𑀭𑀺𑀓𑀸

ब्राह्मी लिपि चंद्रिका

ব্রাহ্মী লিপি চন্দ্রিকা

બ્રામ્હી લિપિ ચંદ્રિકા

ಬ್ರಾಹ್ಮೀ ಲಿಪಿ ಚಂದ್ರಿಕಾ

Brahmi Lipi Chandrika





जिस चरखे को कभी साबरमती के सन्त ने चलाया उस चरखे का जिज्ञासा पूर्वक अवलोकन करते

श्री सुनील सागर जी गुरुराज ।





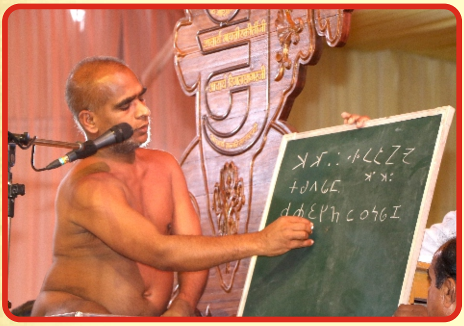
अहमदाबाद के साबरमती नदी के तट पर स्थित वो आश्रम जहाँ से राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भगवान महावीर के अहिंसा सिद्धान्त को विश्व शिखर पर चमकाया, स्वदेशी व स्वाभिमान निर्माण की अलख पूरे भारत में जगाई ऐसे विश्व विख्यात राष्ट्रीय स्मारक साबरमती आश्रम में वर्तमान युग के नायाब युवामहाऋषि **श्री सुनील सागर जी गुरुराज** २८ नवम्बर २०१८ को अवलोकन करने के साथ–साथ जिज्ञासा पूर्वक चरखा चलाते हुए।

पूज्य गुरु के चरणरज इस आश्रम में खिलने के बाद इस स्थान का ऐसा सौभाग्य हुआ की **माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी** और **अमेरीका के राष्ट्रपती डोनाल्ड ट्रम्प** भी इस आश्रम में पधारे व क्षेत्र का गौरव बढाया।

आचार्यश्री ब्राह्मी एवं सुंदरी को ब्राह्मी लिपि का अध्ययन कराते हुए ।









आचार्यश्री गिरनार के जंगलो में समस्त संघ एवं श्रावकों को ब्राह्मी लिपि का अध्ययन कराते हुए ।







॥ णमो बंभीए लिबीए ॥

𑀡𑀫𑁄 𑀩𑀁𑀪𑀻𑀏 𑀮𑀺𑀩𑀻𑀏

(ब्राह्मी लिपि को नस्कार)

ब्राह्मी लिपि चंद्रिका

𑀩𑁆𑀭𑀸𑀳𑁆𑀫𑀻 𑀮𑀺𑀧𑀺 𑀘𑀁𑀤𑁆𑀭𑀺𑀓𑀸

संशोधन / आशीर्वाद

प.पू. मुनिकुंजर आचार्यश्री आदिसागरजी अंकलीकर के चतुर्थ पट्टाधीश

प्राकृताचार्यश्री सुनीलसागरजी मुनिराज

अक्षरांकन/संपादन

डॉ. महावीर प्रभाचंद्र शास्त्री *M.A., Ph.D.*

Awarded by President of India,

(Head - Prakrit & Sanskrit Dept., Walchand College, Solapur)

डॉ. सौ. माधुरी महावीर शास्त्री *M.A., B.Ed., Ph.D.*

(Jr. Lecturer - Prakrit & History, Walchand College, Solapur)

प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ, १८, ईन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नयी दिल्ली-११० ००३

प्राप्तिस्थान

* भारतीय ज्ञानपीठ
* आचार्य आदिसागर अंकलीकर छात्रावास, बाहुबली कालोनी, बासवाड़ा (राज.)
* जम्बुसागर ग्रंथमाला, कल्याण भवन, ७५, पुर्व मंगलवार पेठ, सोलापुर-महाराष्ट्र
* प्रियल-मीत गलालिया-अहमदाबाद (ठाकरडा) मो. 9687023512, 8947075875

मुद्रक : श्री पारस प्रिन्टर्स-अहमदाबाद

ISBN No. : 978-93-87-919-47-1

द्वितीय संस्करण : नवम्बर 2020

मूल्य : Rs. 80/- $

BRAHMI LIPI CHANDRIKA

Second Edition : November 2020

Published by :

Bharatiya Gnanpith

18, Institutional Area, Lodi Road, New Delhi-110 003

Ph. : 011-24698417, 24626467, 23241619 (Daryanganj)

Mob : 9350536020, e-mail : bjnanpith@gmail.com | sales@gnanpith.net, website : www.gnanpith.net

प्रकाशक

भारतीय ज्ञानपीठ

अनुक्रमणिका

प्रतिज्ञा 𑀧𑁆𑀭𑀢𑀺𑀚𑁆𑀜𑀸

मै ब्राह्मी लिपीका अभ्यास करुँगा और प्रसार करुँगा

𑀫𑁃 𑀩𑁆𑀭𑀸𑀳𑁆𑀫𑀻 𑀮𑀺𑀧𑀻𑀓𑀸 𑀅𑀪𑁆𑀬𑀸𑀲 𑀓𑀭𑀼𑀁𑀕𑀸 𑀑𑀭 𑀧𑁆𑀭𑀲𑀸𑀭 𑀓𑀭𑀼𑀁𑀕𑀸

इसके माध्यमसे भारतका उज्ज्वल इतिहास

𑀇𑀲𑀓𑁂 𑀫𑀸𑀥𑁆𑀬𑀫𑀲𑁂 𑀪𑀸𑀭𑀢𑀓𑀸 𑀉𑀚𑁆𑀚𑁆𑀯𑀮 𑀇𑀢𑀺𑀳𑀸𑀲

विश्वके सामने लाने के लिए प्रयत्नशील रहूँगा ।

𑀯𑀺𑀰𑁆𑀯𑀓𑁂 𑀲𑀸𑀫𑀦𑁂 𑀮𑀸𑀦𑁂 𑀓𑁂 𑀮𑀺𑀏 𑀧𑁆𑀭𑀬𑀢𑁆𑀦𑀰𑀻𑀮 𑀭𑀳𑀽𑀁𑀕𑀸

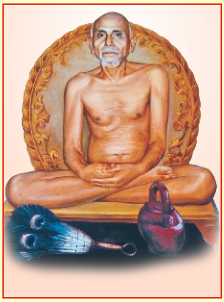
जय भारत

𑀚𑀬 𑀪𑀸𑀭𑀢

समर्पण



आचार्यश्री आदिसागरजी
(अंकलीकर)



आचार्यश्री महावीरकीर्तिजी



आचार्यश्री सन्मतीसागरजी

ब्राह्मी लिपि व प्राकृत भाषा सगी बहने हैं।
इन्हें सीखिए।
बंभीलिबी पागदभासा सहोदरा संति।
इमाओ सिक्खेज्जदु।

प्राकृताचार्य सुनीलसागर



परमपूज्य अभिक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, चतुर्थ पट्टाचार्य, उपसर्ग विजेता, विद्यावाचस्पति, प्राकृताचार्य, प्रज्ञावारिधि, अप्रतिम गुरुभक्त शिरोमणि, राष्ट्रसंत, अर्वाचीन नेमिचंद सिद्धांत चक्रवर्ती, सूरी आदि सन्मति रत्न, उदारमना, वात्सल्य रत्नाकर, बहुभाषाविद, त्रिभाषा कवि, चारित्र भूषण, मौनप्रिय, अध्यात्म योगी, सुकोमल हृदयी, कठोर तपस्वी, श्रमणपरंपरा संवर्धक, अभिनव कुंदकुंद, सर्वोदयी संत, वर्तमान के वर्धमान, चर्या चक्रवर्ती, युवा प्रवर्तक, परम प्रभावक, विश्व गौरव, जिनवाणी कंठभूषण, ऊर्जा के ऊर्जागार, राष्ट्रगौरव आचार्यश्री सुनिलसागरजी गुरुदेव की...जय

णमोकार मंत्र

𑀡𑀫𑁄𑀓𑀸𑀭 𑀫𑀁𑀢𑁆𑀭

The Ṇamokāra Mantra

णमो अरिहंताणं ।

𑀡𑀫𑁄 𑀅𑀭𑀺𑀳𑀁𑀢𑀸𑀡𑀁।

Ṇamo Arihaṃtāṇaṁ

णमो सिद्धाणं ।

𑀡𑀫𑁄 𑀲𑀺𑀤𑁆𑀥𑀸𑀡𑀁।

Ṇamo Siddhāṇaṁ

णमो आइरियाणं ।

𑀡𑀫𑁄 𑀆𑀇𑀭𑀺𑀬𑀸𑀡𑀁।

Ṇamo Ayariyāṇaṁ

णमो उवज्झायाणं ।

𑀡𑀫𑁄 𑀉𑀯𑀚𑁆𑀛𑀸𑀬𑀸𑀡𑀁।

Ṇamo Uvajjhāyāṇaṁ

णमो लोए सव्वसाहूणं ।

𑀡𑀫𑁄 𑀮𑁄𑀏 𑀲𑀯𑁆𑀯𑀲𑀸𑀳𑀽𑀡𑀁।

Ṇamo Loe savva sāhūṇaṁ

एसो पंच णमोयारो सव्वपावप्पणासणो

𑀏𑀲𑁄 𑀧𑀁𑀘 𑀡𑀫𑁄𑀬𑀸𑀭𑁄 𑀲𑀯𑁆𑀯𑀧𑀸𑀯𑀧𑁆𑀧𑀡𑀸𑀲𑀡𑁄

Ēso paṃca ṇamokkāro Savvapāvappanāsaṇo

मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं

𑀫𑀁𑀕𑀮𑀸𑀡𑀁 𑀘 𑀲𑀯𑁆𑀯𑁂𑀲𑀺𑀁 𑀧𑀠𑀫𑀁 𑀳𑁄𑀇 𑀫𑀁𑀕𑀮𑀁

Mangalāṇaṃ ca savvesiṃ padhamaṃ hoi maṃgalaṃ

भारदी-त्थुदी

भारती-स्तुति
(गायन शैली-जयतु संस्कृत्)

जयदु भारदी, जयदु भारदी ।
जिणवाणी सारदा, सुयदेवी सरस्सदी ॥१॥

वीरमुह-णिग्गदा, गोदमादि-गंथिदा,
सुद-सूरि-भासिदा, गुणधरादि-विरइदा ।
कुन्दकुन्द-भारदी, सुदधरादि-धारिदा,
जिणवाणी सारदा, सुयदेवी सरस्सदी ॥ जयदु २॥

अण्णाण-तम-हारिणी, सण्णास-सुद-कारिणी,
सदद-संतिदाइणी, बारसंग-धारिणी ।
मिच्छत्तअंध-णासिणी, सम्मत्त-सम्म-सासिणी,
जिणवाणी सारदा, सुयदेवी सरस्सदी ॥ जयदु ३॥

विसय-विस-रेइया, जम्ममरण-छेत्तिया,
जिणवयण-ओसही, पोत्थया सुहारसा ।
कम्मपुंजं दाहिगा, भवजलहि तारिगा,
जिणवाणी सारदा, सुयदेवी सरस्सदी ॥ जयदु ४॥

- प्राकृताचार्यश्री सुनीलसागरजी मुनिराज

𑀪𑀸𑀭𑀢𑀻 𑀲𑁆𑀢𑀼𑀢𑀻

𑀚𑀬𑀳𑁂 𑀪𑀸𑀭𑀢𑀻 𑀚𑀬𑀳𑁂 𑀪𑀸𑀭𑀢𑀻
𑀚𑀡𑀯𑀡𑀻 𑀮𑀭𑀢 𑀮𑀬𑀦𑀤𑀯𑀻 𑀮𑀭𑀢𑀻𑀢𑁒

𑀯𑀻𑀭𑀫𑀮 𑀡𑀢𑀢 𑀰𑀤𑀫𑀢 𑀕𑀺𑀣𑀢
𑀮𑀤 𑀮𑀬𑀺 𑀪𑀸𑀮𑀢 𑀕𑀡𑀥𑀺𑀢 𑀯𑀺𑀂𑀢
𑀓𑀺𑀤𑀓𑀺𑀤 𑀪𑀸𑀭𑀢𑀻 𑀮𑀤𑀥𑀺𑀢 𑀥𑀺𑀢
𑀚𑀡𑀯𑀡𑀻 𑀮𑀭𑀢 𑀮𑀬𑀦𑀤𑀯𑀻 𑀮𑀭𑀢𑀻𑀢. 𑀚𑀬𑀳𑁂𑁓

𑀅𑀚𑀡 𑀢𑀫 𑀝𑀺𑀡𑀻 𑀮𑀚𑀡 𑀮𑀤 𑀓𑀺𑀡𑀻
𑀮𑀤𑀤 𑀮𑀝𑀕𑀢𑀂𑀡𑀻 𑀩𑀺𑀮𑀕 𑀥𑀺𑀡𑀻
𑀫𑀓𑀢𑀅𑀥 𑀡𑀮𑀝𑀻 𑀮𑀫𑀢 𑀮𑀫 𑀮𑀝𑀻
𑀚𑀡𑀯𑀡𑀻 𑀮𑀭𑀢 𑀮𑀬𑀦𑀤𑀯𑀻 𑀮𑀭𑀢𑀻𑀢. 𑀚𑀬𑀳𑁂𑁔

𑀯𑀮𑀦 𑀯𑀮 𑀭𑀂𑀮 𑀚𑀫𑀫𑀭𑀡 𑀘𑀢𑀮
𑀚𑀡𑀯𑀦𑀡 𑀟𑀮𑀝 𑀝𑀣𑀮 𑀮𑀝𑀭𑀮
𑀓𑀫𑀺𑀬𑀚𑁂 𑀤𑀝𑀕 𑀪𑀸𑀯 𑀚𑀮𑀝 𑀢𑀭𑀕
𑀚𑀡𑀯𑀡𑀻 𑀮𑀭𑀢 𑀮𑀬𑀦𑀤𑀯𑀻 𑀮𑀭𑀢𑀻𑀢. 𑀚𑀬𑀳𑁂𑁕

𑀅𑀘𑀭 𑀮𑀡𑀮𑀮𑀕𑀭

ब्राह्मी लिपि की महिमा

ब्राह्मी लिपि देश की सबसे प्राचीन लिपि है। भरत चक्रवर्ती की छोटी बहन ब्राह्मी और भगवान बाहुबली की छोटी बहन सुंदरी को उनके पिता श्री ऋषभदेवजी ने लिपि और अंक विद्या सिखाई थी। अमरकोष में कहा गया है कि,

ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाऽणी सरस्वती।
व्याहार उक्ति लिपि तं भाषितं वचनं पंच : ॥

अर्थात ब्राह्मी के भारती, भाषा, गीर्वाणी, सरस्वती व लिपि ये पाँच नाम हैं।

इसी ब्राह्मी लिपि में भारत देश का इतिहास छुपा हुआ है, ब्राह्मी लिपि में लिखे खारवेल शिलालेख से ही भारत देश का नाम भारत रखा जाय ऐसा स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरुजी ने सूचित किया था। इस लिपि का पुन: पुन: अध्ययन होना अत्यंत आवश्यक है। लिपि के अभ्यासक डॉ. महावीर शास्त्री और उनकी धर्मपत्नी सौ. माधुरी शास्त्री इन्होंने ब्राह्मी तथा अन्य लिपियों के अनेक अंगोंका संकलन कर अभ्यासकों के लिए यह पुस्तक प्रस्तुत की है। इस प्रकाशनमें परमभक्त रौनक, प्रियल एवं मीत जैन, अहमदाबाद इन्होंने बृहत सहयोग देकर पुण्यलाभ लिया उनका मन:पूर्वक अभिनंदन, शुभाशीर्वाद। पाठकों को इसका निश्चित लाभ होगा।

– आचार्य सुनीलसागर

प्रकाशकीय

भारतीय कला और साहित्य का ज्ञान अगाध है। इसके लिए दुनियाँ के पूरे समुंदर की स्याही बनाकर लेखन किया जाये तो भी वह कम पड़ेगी।

इसी तरह प्रस्तुत पुस्तक में भारतीय लिपियों की जननी ब्राह्मी लिपि के विविध रूप देने का प्रयास किया गया है। लेखकों ने इसके लिए भरपूर परिश्रम लिया है। राष्ट्रसंत श्वेतपिच्छाचार्यश्री विद्यानंद मुनिराजजी एवं प्राकृताचार्य सुनीलसागरजी मुनिराज का इसके लिए विशेष आशीर्वाद मिला है। इसे आकर्षक बनाने के लिए श्री सुरेश लामकाने और श्री सुरेश रजपूत, दिल्ली इन्होंने अथक परिश्रम लिया है। इसके द्वारा संशोधक, पाठकों की अपेक्षा पूर्ण हो, यही मंगल भावना।

– साहू अखिलेश जैन,
प्रबंध न्यासी, भारतीय ज्ञानपीठ

ब्राह्मी लिपि का इतिहास

ब्राह्मी एक प्राचीन लिपि है, जिससे कई एशियाई लिपियों का विकास हुआ है । संशोधकों के अनुसार देवनागरी सहित अन्य दक्षिण एशियाई, दक्षिण-पूर्व-एशियाई, तिब्बती, कोरियाई तथा इथियोपिआई लिपि का विकास भी इसी से हुआ था ।

उत्पत्ति : अभी तक माना जाता था कि ब्राह्मी लिपि का विकास चौथी से तीसरी सदी ईसा पूर्व मौर्यों ने किया था, पर भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण में ताजा उत्खनन से पता चला है कि तमिलनाडु और श्रीलंका में छठी सदी ईसा पूर्व से ही विद्यमान थी ।

देशी लिपी उत्पत्ति का सिद्धांत :

कई विद्वानों का मत है कि यह लिपि प्राचीन सरस्वती लिपि (सिन्धु लिपि) से निकली है । अतः यह पूर्ववर्ती रूप में भारत में पहले से प्रयोग में थी । सरस्वती लिपि के प्रचलन से हट जाने के बाद प्राकृत भाषा लिखने के लिए ब्राह्मी लिपि प्रचलन में आई । ब्राह्मी लिपि में संस्कृत में ज्यादा कुछ नहीं लिखा गया । प्राकृत/पाली भाषा में लिखे गए मौर्य सम्राट अशोक के लेख आज भी सुरक्षित हैं । इसीलिये शायद यह भ्रम उत्पन्न हुआ कि इस का विकास मौर्यो ने किया ।

यह लिपि बाईं और से दाहिनी और को लिखी जाती है । उनसे निकली हुई आजकल की लिपियाँ भी इसी पद्धति का अनुकरण करती हैं ।

प्राचीन बौद्ध ग्रंथ ललितविस्तर में ६४ लिपियों के नाम गिनाए गए हैं जो बुद्ध को सिखाई गई थी, उनमें ब्राह्मी लिपि का नाम है । ललितविस्तर का चीनी भाषा में अनुवाद ई.स. ३०८ में हुआ था । तीर्थंकर ऋषभदेव ने अपनी पुत्री ब्राह्मी को यह लिपि सिखाई थी ऐसा पुराणग्रंथो में उल्लेख मिलता है । जैनों के पन्नवण सूत्र और समवायांग सूत्र में १८ लिपियों के नाम दिए है, जिनमें पहला नाम बंभी (ब्राह्मी) है । भगवती सूत्र का आरंभ ''नमो बंभीए लिबिए'' (ब्राह्मी लिपिको नमस्कार) से होता है ।

सबसे प्राचीन लिपि भारतवर्ष में अशोक की पाई जाती है, जो सिंधु नदी के पार के प्रदेशों (गांधार आदि) को छोड़ भारतवर्ष में सर्वत्र बहुधा एक ही रूप में मिलती है । जिस लिपि में अशोक के लेख हैं वह प्राचीन ब्राह्मी लिपि है । जैनों के ''प्रज्ञापनासूत्र'' में लिखा है कि अर्धमागधी भाषा जिस लिपि में प्रकाशित की जाती है वह ब्राह्मी लिपि है । अर्धमागधी भाषा मथुरा और पाटलीपुत्र के बीच के प्रदेश की भाषा है जिससे हिंदी निकली है । अतः ब्राह्मी लिपि का विकास हुआ जो बाद में ''नागरी'' कहलाई । मगध के राजा आदित्यसेन के समय (ईसा की सातवी शताब्दी) के कुटिल मागधी अक्षरों में नागरी का वर्तमान रूप स्पष्ट

दिखाई पडता है। ईसा की ९वीं और १० वीं शताब्दी से तो नागरी अपने पूर्ण रूप में लगती है। जिस प्रकार अशोक के समय के अक्षरों से नागरी अक्षर क्रमशः रूपांतरित होते होते बने हैं यह पंडित गौरीशंकर हीराचंद ओझाजी ने प्राचीन लिपिमाला पुस्तक में और एक नक्शे द्वारा स्पष्ट दिखा दिया है।

विदेशी उत्पत्ति का सिद्धांतः

देशी तथा विदेशी विद्वानों ने सप्रमाण यह सिद्ध किया है कि ब्राह्मी लिपि का विकास भारत में स्वतंत्र रीतिसे हुआ। परंतु कुछ पश्चात्य विद्वानों का मत है कि भारतवासियों ने अक्षर लिखना विदेशियों से सीखा तथा ब्राह्मीलिपि भी उसी प्रकार प्राचीन फिजीशियन लिपि से उत्पन्न हुई है जिस प्रकार अरबी, यूनानी, रोमन आदि लिपियाँ। किंतु उपलब्ध प्रमाणानुसार यह भारतीय लिपि सिद्ध होती है।

ब्राह्मी लिपि की विशेषतायें :

- यह बाँये से दाँये की तरफ लिखी जाती है।
- यह मात्रात्मक लिपि है। व्यंजनों पर मात्रा लगाकर लिखी जाती है।
- कुछ व्यंजनों के संयुक्त होने पर उनके लिए संयुक्ताक्षर का प्रयोग होता है।
- वर्णों का क्रम वही है जो आधुनिक भारतीय लिपियों में है।

ब्राह्मी की संतति :

ब्राह्मी लिपि से उद्गम हुई कुछ लिपियाँ और उनकी आकृति एवं ध्वनि में समानताएं स्पष्टतया देखी जा सकती है। इनमें से कई लिपियाँ ईसा के समय के आसपास विकसित हुई थी और बाद में भी प्राकृत भाषा के प्रवाहशील रूप अनुसार ब्राह्मी लिपि के भी अनेक प्रकार विकसित हुए। देवनागरी, बांगला, उड़िया, गुजराती, गुरुमुखी, तमिल, मलयालम, सिंहल, कन्नड़, तेलुगु, रंजना, नेपाली, भुंजिमोल, कोरियाली, थाई, बर्मेली, लाओ, खमेर, जावानीज, खुदाबादी आदि ब्राह्मी लिपी सह विकसित प्रमुख लिपियाँ है।

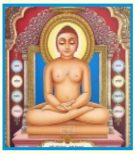
प्रस्तुत पुस्तक में ब्राह्मी लिपि के अनेक संस्करणों का अभ्यास कर एक सर्वमान्य स्वरुप प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इस प्रकार प्राचीन लिपि का यह रूप इतिहास, लिपि संशोधक एवं पुरातात्विक अभ्यासकों को निश्चितही सहयोगी सिद्ध होगा, यही मंगल कामना।

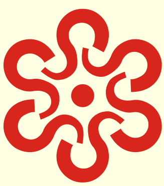
– महावीर प्रभाचंद्र शास्त्री

श्रुतपंचमी -वीरनिर्वाण २५४५

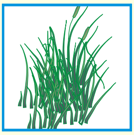
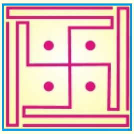
७ जून २०१९

स्वर वर्ण 𑀲𑁆𑀯𑀭 𑀯𑀡𑁆𑀡

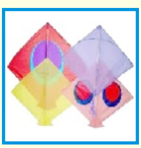
ब्राह्मी	शब्दस्वरुप		देवनागरी रोमन	बंगाली	गुजराती	पंजाबी	कन्नड	तामिल
𑀅	𑀅𑀭𑀺𑀳𑀁𑀢 अरिहंत Arihant		अ a	অ	અ	ਅ	ಅ	அ
𑀆	𑀆𑀘𑀸𑀭𑁆𑀬 आचार्य Aacharya		आ ā	আ	આ	ਆ	ಆ	ஆ
𑀇	𑀇𑀁𑀤𑁆𑀭 इंद्र Indra		इ i	ই	ઇ	ਇ	ಇ	இ
𑀈	𑀈𑀓𑁆𑀱𑀼 ईक्षु Ekshu		ई ī	ঈ	ઈ	ਈ	ಈ	ஈ
𑀉	𑀉𑀧𑀸𑀥𑁆𑀬𑀸𑀬 उपाध्याय Upadhyay		उ u	উ	ઉ	ਉ	ಉ	உ
𑀊	𑀊𑀁𑀝 ऊँट Uoot		ऊ ū	ঊ	ઊ	ਊ	ಊ	ஊ

ब्राह्मी	शब्दस्वरुप		देवनागरी रोमन	बंगाली	गुजराती	पंजाबी	कन्नड	तामिल
𑀏	𑀏𑀮𑀓 एलक Elak		ए e	এ	એ	ਏ	ಏ	ഏ
𑀐	𑀐𑀦𑀓 ऐनक Ainak		ऐ ai	ঐ	ઐ	ਐ	ಐ	ഐ
𑀑	𑀑𑀔𑀮𑀻 ओखली Okhali		ओ o	ও	ઓ	ਓ	ಒ	ഒ
𑀒	𑀒𑀭𑀢 औरत Aurat		औ aā	ঔ	ઔ	ਔ	ಔ	ഔ
𑀅𑀁	𑀅𑀁𑀕𑀽𑀭 अंगूर Angoor		अं aṃ	অং	અં	ਅਂ	ಅಂ	ം
𑀅𑀂			अः aḥ	অঃ	અઃ	ਅਃ	ಅಃ	ഃ

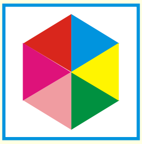
व्यंजन वर्ण 𑀯𑁆𑀬𑀁𑀚𑀦 𑀯𑀭𑁆𑀡

ब्राह्मी	शब्दस्वरुप		देवनागरी रोमन	बंगाली	गुजराती	पंजाबी	कन्नड	तामिल
𑀓	𑀓𑀮𑀰 कलश Kalash		क ka	ক	ક	ਕ	ಕ	ക
𑀔	𑀔𑀸𑀝 खाट Khat		ख kha	খ	ખ	ਖ	ಖ	ഖ
𑀕	𑀕𑀸𑀬 गाय Gaya		ग ga	গ	ગ	ਗ	ಗ	ഗ
𑀖	𑀖𑀸𑀲 घास Ghas		घ gha	ঘ	ઘ	ਘ	ಘ	ഘ
𑀗	नंद्यावर्त		ङ ṅa	ঙ	ઙ	ਙ	ಙ	ങ
𑀘	𑀘𑀫𑁆𑀫𑀘 चम्मच Chammach		च Ch	চ	ચ	ਚ	ಚ	ച
𑀙	𑀙𑀸𑀢𑀸 छाता Chhata		छ Chh	ছ	છ	ਛ	ಛ	ഛ

ब्राह्मी	शब्दस्वरुप		देवनागरी रोमन	बंगाली	गुजराती	पंजाबी	कन्नड	तामिल
𑀚	𑀚𑀳𑀸𑀚 जहाज Jahaj		ज ja	জ	જ	ਜ	ಜ	ജ
𑀛	𑀛𑀭𑀦𑀸 झरना Zarana		झ jha	ঝ	ઝ	ਝ	ಝ	ഝ
𑀜			ञ ña	ঞ	ઞ	ਞ	ಞ	ഞ
𑀝	𑀝𑀫𑀸𑀝𑀭 टमाटर Tamatar		ट ṭa	ট	ટ	ਟ	ಟ	ട
𑀞	𑀞𑀧𑁆𑀧𑀸 ठप्पा Thappa		ठ ṭha	ঠ	ઠ	ਠ	ಠ	ഠ
𑀟	𑀟𑀫𑀭𑀽 डमरु Damaru		ड ḍa	ড	ડ	ਡ	ಡ	ഡ
𑀠	𑀠𑁄𑀮𑀓 ढोलक Dholak		ढ ḍha	ঢ	ઢ	ਢ	ಢ	ഢ

ब्राह्मी	शब्दस्वरुप	देवनागरी रोमन	बंगाली	गुजराती	पंजाबी	कन्नड	तामिल
𑀡	𑀡𑀫𑁄 णमो Ñamo 	ण ṇa	ণ	ણ	ਣ	ಣ	ണ
𑀢	𑀢𑀮𑀯𑀸𑀭 तलवार Talvar 	त ta	ত	ત	ਤ	ತ	த
𑀣	𑀣𑀸𑀮𑀻 थाली Thali 	थ tha	থ	થ	ਥ	ಥ	ഥ
𑀤	𑀤𑀯𑀸𑀇 दवाई Davai 	द da	দ	દ	ਦ	ದ	ദ
𑀥	𑀥𑀦𑀼𑀱 धनुष Dhanush 	ध dha	ধ	ધ	ਧ	ಧ	ധ
𑀦	𑀦𑀮 नल Nal 	न na	ন	ન	ਨ	ನ	ந
𑀧	𑀧𑀢𑀁𑀕 पतंग Patang 	प pa	প	પ	ਪ	ಪ	പ

ब्राह्मी	शब्दस्वरुप		देवनागरी रोमन	बंगाली	गुजराती	पंजाबी	कन्नड	तामिल
𑀨	𑀨𑀽𑀮 फूल Phūl		फ pha	ফ	ફ	ਫ	ಫ	ഫ
𑀩	𑀩𑀢𑀓 बतक Batak		ब ba	ব	બ	ਬ	ಬ	ബ
𑀪	𑀪𑀝𑁆𑀝𑀸𑀭𑀓 भट्टारक Bhatarak		भ bha	ভ	ભ	ਭ	ಭ	ഭ
𑀫	𑀫𑀓𑀸𑀦 मकान Makan		म ma	ম	મ	ਮ	ಮ	മ
𑀬	𑀬𑀚𑁆𑀜 यज्ञ Yajnya		य ya	য	ય	ਯ	ಯ	ய
𑀭	𑀭𑀣 रथ Rath		र ra	র	ર	ਰ	ರ	ர
𑀮	𑀮𑁅𑀁𑀕 लौंग Laung		ल la	ল	લ	ਲ	ಲ	ല

ब्राह्मी	शब्दस्वरुप		देवनागरी रोमन	बंगाली	गुजराती	पंजाबी	कन्नड	तामिल
𑀯	𑀯𑀻𑀡𑀸 वीणा Veeṇa		व va	ব	વ	ਵ	ವ	வ
𑀰	𑀰𑀺𑀔𑀭 शिखर Shikhar		श śa	শ	શ	ਸ਼	ಶ	ஶ
𑀱	𑀱𑀝𑀓𑁄𑀡 षटकोण Shatakon		ष ṣa	ষ	ષ	ਸ਼	ಷ	ஷ
𑀲	𑀲𑀫𑀈 समई Samai		स sa	স	સ	ਸ	ಸ	ஸ
𑀳	𑀳𑀺𑀭𑀦 हिरन Hiran		ह ha	হ	હ	ਹ	ಹ	ஹ

𑁦	०	0
𑁒	१	1
𑁓	२	2
𑁔	३	3

𑁕	४	4
𑁖	५	5
𑁗	६	6
𑁘	७	7

𑁙	८	8
𑁚	९	9
𑁛	१०	10
𑁧𑁦	१०	10

क 𑀓 K	का 𑀓𑀸 Ka	कि 𑀓𑀺 Ki	की 𑀓𑀻 Kee	कु 𑀓𑀼 Ku	कू 𑀓𑀽 Koo
के 𑀓𑁂 Ke	कै 𑀓𑁃 Kai	को 𑀓𑁄 Ko	कौ 𑀓𑁅 Kou	कं 𑀓𑀁 Kam	कः 𑀓𑀂 Kah
ख 𑀔 Kh	खा 𑀔𑀸 Kha	खि 𑀔𑀺 Khi	खी 𑀔𑀻 Khee	खु 𑀔𑀼 Khu	खू 𑀔𑀽 Khoo
खे 𑀔𑁂 Khe	खै 𑀔𑁃 Khai	खो 𑀔𑁄 Kho	खौ 𑀔𑁅 Khou	खं 𑀔𑀁 Kham	खः 𑀔𑀂 Khah
ग 𑀕 G	गा 𑀕𑀸 Ga	गि 𑀕𑀺 Gi	गी 𑀕𑀻 Gee	गु 𑀕𑀼 Gu	गू 𑀕𑀽 Goo
गे 𑀕𑁂 Ge	गै 𑀕𑁃 Gai	गो 𑀕𑁄 Go	गौ 𑀕𑁅 Gou	गं 𑀕𑀁 Gam	गः 𑀕𑀂 Gah

घ	घा	घि	घी	घु	घू
𑀖	𑀖𑀸	𑀖𑀺	𑀖𑀻	𑀖𑀼	𑀖𑀽
Gh	Gha	Ghi	Ghee	Ghu	Ghoo
घे	घै	घो	घौ	घं	घः
𑀖𑁂	𑀖𑁃	𑀖𑁄	𑀖𑁅	𑀖𑀁	𑀖𑀂
Ghe	Ghai	Gho	Ghou	Gham	Ghah

च	चा	चि	ची	चु	चू
𑀘	𑀘𑀸	𑀘𑀺	𑀘𑀻	𑀘𑀼	𑀘𑀽
Ch	Cha	Chi	Chee	Chu	Choo
चे	चै	चो	चौ	चं	चः
𑀘𑁂	𑀘𑁃	𑀘𑁄	𑀘𑁅	𑀘𑀁	𑀘𑀂
Che	Chai	Cho	Chou	Cham	Chah

छ	छा	छि	छी	छु	छू
𑀙	𑀙𑀸	𑀙𑀺	𑀙𑀻	𑀙𑀼	𑀙𑀽
Chh	Chha	Chhi	Chhee	Chhu	Chhoo
छे	छै	छो	छौ	छं	छः
𑀙𑁂	𑀙𑁃	𑀙𑁄	𑀙𑁅	𑀙𑀁	𑀙𑀂
Chhe	Chhai	Chho	Chhou	Chham	Chhah

ज	जा	जि	जी	जु	जू
𑀚	𑀚𑀸	𑀚𑀺	𑀚𑀻	𑀚𑀼	𑀚𑀽
J	Ja	Ji	Jee	Ju	Joo
जे	जै	जो	जौ	जं	जः
𑀚𑁂	𑀚𑁃	𑀚𑁄	𑀚𑁅	𑀚𑀁	𑀚𑀂
Je	Jai	Jo	Jou	Jam	Jah

झ	झा	झि	झी	झु	झू
𑀛	𑀛𑀸	𑀛𑀺	𑀛𑀻	𑀛𑀼	𑀛𑀽
Jh	Jha	Jhi	Jhee	Jhu	Jhoo
झे	झै	झो	झौ	झं	झः
𑀛𑁂	𑀛𑁃	𑀛𑁄	𑀛𑁅	𑀛𑀁	𑀛𑀂
Jhe	Jhai	Jho	Jhou	Jham	Jhah

ट	टा	टि	टी	टु	टू
𑀝	𑀝𑀸	𑀝𑀺	𑀝𑀻	𑀝𑀼	𑀝𑀽
T	Ta	Ti	Tee	Tu	Too
टे	टै	टो	टौ	टं	टः
𑀝𑁂	𑀝𑁃	𑀝𑁄	𑀝𑁅	𑀝𑀁	𑀝𑀂
Te	Tai	To	Tou	Tam	Tah

ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू
𑀞	𑀞𑀸	𑀞𑀺	𑀞𑀻	𑀞𑀼	𑀞𑀽
Th	Tha	Thi	Thee	Thu	Thoo

ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
𑀞𑁂	𑀞𑁃	𑀞𑁄	𑀞𑁅	𑀞𑀁	𑀞𑀂
The	Thai	Tho	Thou	Tham	Thah

ड	डा	डि	डी	डु	डू
𑀟	𑀟𑀸	𑀟𑀺	𑀟𑀻	𑀟𑀼	𑀟𑀽
D	Da	Di	Dee	Du	Doo

डे	डै	डो	डौ	डं	डः
𑀟𑁂	𑀟𑁃	𑀟𑁄	𑀟𑁅	𑀟𑀁	𑀟𑀂
De	Dai	Do	Dou	Dam	Dah

ढ	ढा	ढि	ढी	ढु	ढू
𑀠	𑀠𑀸	𑀠𑀺	𑀠𑀻	𑀠𑀼	𑀠𑀽
Dh	Dha	Dhi	Dhee	Dhu	Dhoo

ढे	ढै	ढो	ढौ	ढं	ढः
𑀠𑁂	𑀠𑁃	𑀠𑁄	𑀠𑁅	𑀠𑀁	𑀠𑀂
Dhe	Dhai	Dho	Dhou	Dham	Dhah

ण	णा	णि	णी	णु	णू
𑀡	𑀡𑀸	𑀡𑀺	𑀡𑀻	𑀡𑀼	𑀡𑀽
Ṇ	Ṇa	Ṇi	Ṇee	Ṇu	Ṇoo
णे	णै	णो	णौ	णं	ण:
𑀡𑁂	𑀡𑁃	𑀡𑁄	𑀡𑁅	𑀡𑀁	𑀡𑀂
Ṇe	Ṇai	Ṇo	Ṇou	Ṇam	Ṇah

त	ता	ति	ती	तु	तू
𑀢	𑀢𑀸	𑀢𑀺	𑀢𑀻	𑀢𑀼	𑀢𑀽
T	Ta	Ti	Tee	Tu	Too
ते	तै	तो	तौ	तं	तः
𑀢𑁂	𑀢𑁃	𑀢𑁄	𑀢𑁅	𑀢𑀁	𑀢𑀂
Te	Tai	To	Tou	Tam	Tah

थ	था	थि	थी	थु	थू
𑀣	𑀣𑀸	𑀣𑀺	𑀣𑀻	𑀣𑀼	𑀣𑀽
Th	Tha	Thi	Thee	Thu	Thoo
थे	थै	थो	थौ	थं	थ:
𑀣𑁂	𑀣𑁃	𑀣𑁄	𑀣𑁅	𑀣𑀁	𑀣𑀂
The	Thai	Tho	Thou	Tham	Thah

द	दा	दि	दी	दु	दू
𑀤	𑀤𑀸	𑀤𑀺	𑀤𑀻	𑀤𑀼	𑀤𑀽
D	Da	Di	Dee	Du	Doo
दे	दै	दो	दौ	दं	दः
𑀤𑁂	𑀤𑁃	𑀤𑁄	𑀤𑁅	𑀤𑀁	𑀤𑀂
De	Dai	Do	Dou	Dam	Dah

ध	धा	धि	धी	धु	धू
𑀥	𑀥𑀸	𑀥𑀺	𑀥𑀻	𑀥𑀼	𑀥𑀽
Dh	Dha	Dhi	Dhee	Dhu	Dhoo
धे	धै	धो	धौ	धं	धः
𑀥𑁂	𑀥𑁃	𑀥𑁄	𑀥𑁅	𑀥𑀁	𑀥𑀂
Dhe	Dhai	Dho	Dhou	Dham	Dhah

न	ना	नि	नी	नु	नू
𑀦	𑀦𑀸	𑀦𑀺	𑀦𑀻	𑀦𑀼	𑀦𑀽
N	Na	Ni	Nee	Nu	Noo
ने	नै	नो	नौ	नं	नः
𑀦𑁂	𑀦𑁃	𑀦𑁄	𑀦𑁅	𑀦𑀁	𑀦𑀂
Ne	Nai	No	Nou	Nam	Nah

प	पा	पि	पी	पु	पू
𑀧	𑀧𑀸	𑀧𑀺	𑀧𑀻	𑀧𑀼	𑀧𑀽
P	Pa	Pi	Pee	Pu	Poo
पे	पै	पो	पौ	पं	पः
𑀧𑁂	𑀧𑁃	𑀧𑁄	𑀧𑁅	𑀧𑀁	𑀧𑀂
Pe	Pai	Po	Pou	Pam	Pah

फ	फा	फि	फी	फु	फू
𑀨	𑀨𑀸	𑀨𑀺	𑀨𑀻	𑀨𑀼	𑀨𑀽
Ph	Pha	Phi	Phee	Phu	Phoo
फे	फै	फो	फौ	फं	फः
𑀨𑁂	𑀨𑁃	𑀨𑁄	𑀨𑁅	𑀨𑀁	𑀨𑀂
Phe	Phai	Pho	Phou	Pham	Phah

ब	बा	बि	बी	बु	बू
𑀩	𑀩𑀸	𑀩𑀺	𑀩𑀻	𑀩𑀼	𑀩𑀽
B	Ba	Bi	Bee	Bu	Boo
बे	बै	बो	बौ	बं	बः
𑀩𑁂	𑀩𑁃	𑀩𑁄	𑀩𑁅	𑀩𑀁	𑀩𑀂
Be	Bai	Bo	Bou	Bam	Bah

भ	भा	भि	भी	भु	भू
𑀪	𑀪𑀸	𑀪𑀺	𑀪𑀻	𑀪𑀼	𑀪𑀽
Bh	Bha	Bhi	Bhee	Bhu	Bhoo
भे	भै	भो	भौ	भं	भः
𑀪𑁂	𑀪𑁃	𑀪𑁄	𑀪𑁅	𑀪𑀁	𑀪𑀂
Bhe	Bhai	Bho	Bhou	Bham	Bhah

म	मा	मि	मी	मु	मू
𑀫	𑀫𑀸	𑀫𑀺	𑀫𑀻	𑀫𑀼	𑀫𑀽
M	Ma	Mi	Mee	Mu	Moo
मे	मै	मो	मौ	मं	मः
𑀫𑁂	𑀫𑁃	𑀫𑁄	𑀫𑁅	𑀫𑀁	𑀫𑀂
Me	Mai	Mo	Mou	Mam	Mah

य	या	यि	यी	यु	यू
𑀬	𑀬𑀸	𑀬𑀺	𑀬𑀻	𑀬𑀼	𑀬𑀽
Y	Ya	Yi	Yee	Yu	Yoo
ये	यै	यो	यौ	यं	यः
𑀬𑁂	𑀬𑁃	𑀬𑁄	𑀬𑁅	𑀬𑀁	𑀬𑀂
Ye	Yai	Yo	You	Yam	Yah

र	रा	रि	री	रु	रू
𑀭	𑀭𑀸	𑀭𑀺	𑀭𑀻	𑀭𑀼	𑀭𑀽
R	Ra	Ri	Ree	Ru	Roo
रे	रै	रो	रौ	रं	रः
𑀭𑁂	𑀭𑁃	𑀭𑁄	𑀭𑁅	𑀭𑀁	𑀭𑀂
Re	Rai	Ro	Rou	Ram	Rah

ल	ला	लि	ली	लु	लू
𑀮	𑀮𑀸	𑀮𑀺	𑀮𑀻	𑀮𑀼	𑀮𑀽
L	La	Li	Lee	Lu	Loo
ले	लै	लो	लौ	लं	लः
𑀮𑁂	𑀮𑁃	𑀮𑁄	𑀮𑁅	𑀮𑀁	𑀮𑀂
Le	Lai	Lo	Lou	Lam	Lah

व	वा	वि	वी	वु	वू
𑀯	𑀯𑀸	𑀯𑀺	𑀯𑀻	𑀯𑀼	𑀯𑀽
V	Va	Vi	Vee	Vu	Voo
वे	वै	वो	वौ	वं	वः
𑀯𑁂	𑀯𑁃	𑀯𑁄	𑀯𑁅	𑀯𑀁	𑀯𑀂
Ve	Vai	Vo	Vou	Vam	Vah

श	शा	शि	शी	शु	शू
𑀰	𑀰𑀸	𑀰𑀺	𑀰𑀻	𑀰𑀼	𑀰𑀽
Sh	Sha	Shi	Shee	Shu	Shoo
शे	शै	शो	शौ	शं	शः
𑀰𑁂	𑀰𑁃	𑀰𑁄	𑀰𑁅	𑀰𑀁	𑀰𑀂
She	Shai	Sho	Shou	Sham	Shah

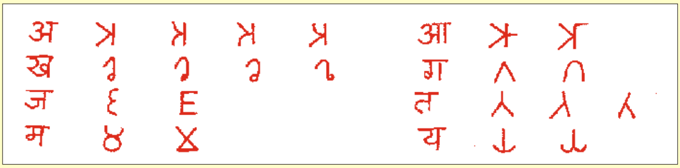
ष	षा	षि	षी	षु	षू
𑀱	𑀱𑀸	𑀱𑀺	𑀱𑀻	𑀱𑀼	𑀱𑀽
Sh	Sha	Shi	Shee	Shu	Shoo
षे	षै	षो	षौ	षं	षः
𑀱𑁂	𑀱𑁃	𑀱𑁄	𑀱𑁅	𑀱𑀁	𑀱𑀂
She	Shai	Sho	Shou	Sham	Shah

स	सा	सि	सी	सु	सू
𑀲	𑀲𑀸	𑀲𑀺	𑀲𑀻	𑀲𑀼	𑀲𑀽
S	Sa	Si	See	Su	Soo
से	सै	सो	सौ	सं	सः
𑀲𑁂	𑀲𑁃	𑀲𑁄	𑀲𑁅	𑀲𑀁	𑀲𑀂
Se	Sai	So	Sou	Sam	Sah

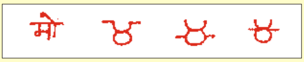
ह	हा	हि	ही	हु	हू
𑀳	𑀳𑀸	𑀳𑀺	𑀳𑀻	𑀳𑀼	𑀳𑀽
H	Ha	Hi	Hee	Hu	Hoo
हे	है	हो	हौ	हं	हः
𑀳𑁂	𑀳𑁃	𑀳𑁄	𑀳𑁅	𑀳𑀁	𑀳𑀂
He	Hai	Ho	Hou	Ham	Hah

क्ष	त्र	ज्ञ
𑀓𑁆𑀱	𑀢𑁆𑀭	𑀚𑁆𑀜

वर्ण के अन्य उपलब्ध रूप



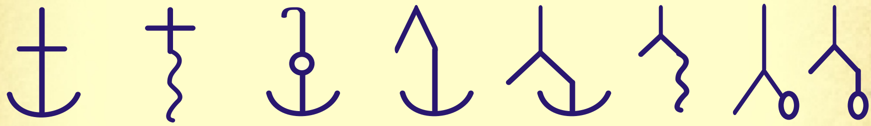
स्वर चिह्नों के अन्य उपलब्ध रूप



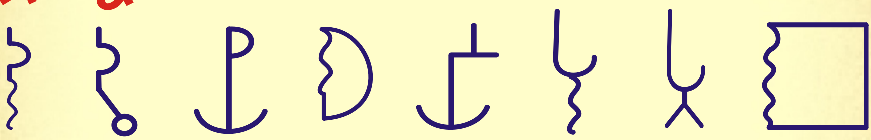
काल भेदानुसार एवं रचनाकारों की अपनी पद्धतिनुसार उपर्युक्त अक्षरों में कुछ भेद भी पाये जाते हैं। इसी प्रकार पत्थर, ताम्रपत्र एवं ताड़पत्रों पर लिखते समय एवं प्रतिलिपि करते समय लेखकों के अक्षर अनुसार ब्राह्मी लिपि के आकार में भेद भी पाये जाते हैं। सूज्ञ संशोधकों को विशेष तुलना कर विषयानुसार अक्षरों को जान लेना चाहिए।

जुड़े अक्षर – संयुक्त व्यंजन

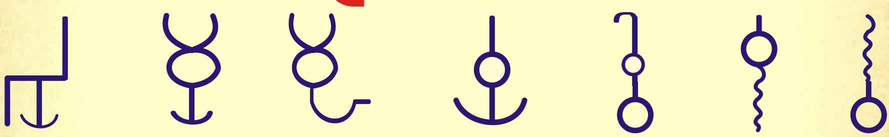
क्य क्र ख्य ग्य त्य त्र त्व



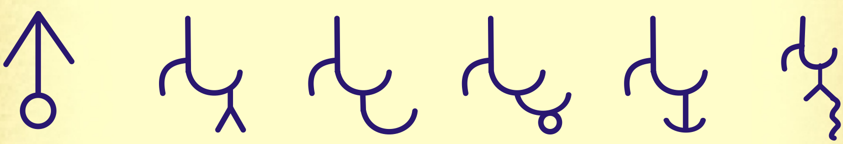
द्र द्व ध्य ध्र न्य प्र प्त ब्र



भ्य म्य म्ह व्य ख्व व्र र्व



श्व स्त स्प स्म स्य स्त्र



स्व ह्य ह्व ह्म ष्प ह्न र्श्व



‘अ’ का शब्द प्रयोग

रथ	-	𑀭𑀣	नल	-	𑀦𑀮
हल	-	𑀳𑀮	फल	-	𑀨𑀮
जग	-	𑀚𑀕	धर	-	𑀥𑀭
मगर	-	𑀫𑀕𑀭	जलज	-	𑀚𑀮𑀚
भगत	-	𑀪𑀕𑀢	सडक	-	𑀲𑀟𑀓
कलम	-	𑀓𑀮𑀫	मटर	-	𑀫𑀝𑀭
बरतन	-	𑀩𑀭𑀢𑀦	कसरत	-	𑀓𑀲𑀭𑀢
अचकन	-	𑀅𑀘𑀓𑀦	टमटम	-	𑀝𑀫𑀝𑀫
शरबत	-	𑀰𑀭𑀩𑀢	बरगद	-	𑀩𑀭𑀕𑀤

अभय कसरत कर।
𑀅𑀪𑀬 𑀓𑀲𑀭𑀢 𑀓𑀭.

जग रख।
𑀚𑀕 𑀭𑀔.

शरबत चख।
𑀰𑀭𑀩𑀢 𑀘𑀔.

नमन सरल है।
𑀦𑀫𑀦 𑀲𑀭𑀮 𑀳𑁃.

अजर अमर हैं सिद्ध।
𑀅𑀚𑀭 𑀅𑀫𑀭 𑀳𑁃𑀁 𑀲𑀺𑀤𑁆𑀥.

‘आ’ का शब्द प्रयोग

बाजा	𑀩𑀸𑀚𑀸	पाठ	𑀧𑀸𑀞
छाता	𑀙𑀸𑀢𑀸	गाय	𑀕𑀸𑀬
हाथ	𑀳𑀸𑀣	घास	𑀖𑀸𑀲
बाजार	𑀩𑀸𑀚𑀸𑀭	अनार	𑀅𑀦𑀸𑀭
जहाज	𑀚𑀳𑀸𑀚	गमला	𑀕𑀫𑀮𑀸
मकान	𑀫𑀓𑀸𑀦	राग	𑀭𑀸𑀕
दरवाजा	𑀤𑀭𑀯𑀸𑀚𑀸	दरबार	𑀤𑀭𑀩𑀸𑀭
जानवर	𑀚𑀸𑀦𑀯𑀭	महाराज	𑀫𑀳𑀸𑀭𑀸𑀚
बरसात	𑀩𑀭𑀲𑀸𑀢	पाठशाला	𑀧𑀸𑀞𑀰𑀸𑀮𑀸

पारसनाथ भगवान की जय।
𑀧𑀸𑀭𑀲𑀦𑀸𑀣 𑀪𑀕𑀯𑀸𑀦 𑀓𑀻 𑀚𑀬.

रमा बाजा मत बजा।
𑀭𑀫𑀸 𑀩𑀸𑀚𑀸 𑀫𑀢 𑀩𑀚𑀸.

पाठ याद कर।
𑀧𑀸𑀞 𑀬𑀸𑀤 𑀓𑀭.

मंदिर जा।
𑀫𑀁𑀤𑀺𑀭 𑀚𑀸.

अनार खा।
𑀅𑀦𑀸𑀭 𑀔𑀸.

गीत गा।
𑀕𑀻𑀢 𑀕𑀸.

'इ' का शब्द प्रयोग

रवि	𑀭𑀯𑀺	सिर	𑀲𑀺𑀭
कवि	𑀓𑀯𑀺	शिला	𑀰𑀺𑀮𑀸
जिराफ	𑀚𑀺𑀭𑀸𑀨	तिलक	𑀢𑀺𑀮𑀓
किसान	𑀓𑀺𑀲𑀸𑀦	निशान	𑀦𑀺𑀰𑀸𑀦
डाकिया	𑀟𑀸𑀓𑀺𑀬𑀸	तकिया	𑀢𑀓𑀺𑀬𑀸
सितार	𑀲𑀺𑀢𑀸𑀭	गिलास	𑀕𑀺𑀮𑀸𑀲
हिरन	𑀳𑀺𑀭𑀦	किरन	𑀓𑀺𑀭𑀦
किशमिश	𑀓𑀺𑀰𑀫𑀺𑀰	परिचय	𑀧𑀭𑀺𑀘𑀬
अभिमान	𑀅𑀪𑀺𑀫𑀸𑀦	नियमित	𑀦𑀺𑀬𑀫𑀺𑀢

डाकिया डाक लाया।
𑀟𑀸𑀓𑀺𑀬𑀸 𑀟𑀸𑀓 𑀮𑀸𑀬𑀸.

चिड़िया फिर आ।
𑀘𑀺𑀟𑀺𑀬𑀸 𑀨𑀺𑀭 𑀆.

जिनेश दिनेश को जगा।
𑀚𑀺𑀦𑁂𑀰 𑀤𑀺𑀦𑁂𑀰 𑀓𑁄 𑀚𑀕𑀸.

सितार बजा।
𑀲𑀺𑀢𑀸𑀭 𑀩𑀚𑀸.

विनय विनम्र है।
𑀯𑀺𑀦𑀬 𑀯𑀺𑀦𑀫𑁆𑀭 𑀳𑁃.

‘ई’ का शब्द प्रयोग

घडी	𑀖𑀟𑀻	शीशा	𑀰𑀻𑀰𑀸
हाथी	𑀳𑀸𑀣𑀻	जीभ	𑀚𑀻𑀪
छतरी	𑀙𑀢𑀭𑀻	खीर	𑀔𑀻𑀭
बकरी	𑀩𑀓𑀭𑀻	वकील	𑀯𑀓𑀻𑀮
पालकी	𑀧𑀸𑀮𑀓𑀻	ककडी	𑀓𑀓𑀟𑀻
बिजली	𑀩𑀺𑀚𑀮𑀻	मदारी	𑀫𑀤𑀸𑀭𑀻
गलीचा	𑀕𑀮𑀻𑀘𑀸	भिखारी	𑀪𑀺𑀔𑀸𑀭𑀻
पपीता	𑀧𑀧𑀻𑀢𑀸	गगरी	𑀕𑀕𑀭𑀻
अलमारी	𑀅𑀮𑀫𑀸𑀭𑀻	गीदड	𑀕𑀻𑀤𑀟

घडी पहन।

𑀖𑀟𑀻 𑀧𑀳𑀦.

ककडी खा।

𑀓𑀓𑀟𑀻 𑀔𑀸.

बिजली चमकी।

𑀩𑀺𑀚𑀮𑀻 𑀘𑀫𑀓𑀻.

छतरी उड गई।

𑀙𑀢𑀭𑀻 𑀉𑀟 𑀕𑀈.

ईशान ईश्वर की पूजा करता है।

𑀈𑀰𑀸𑀦 𑀈𑀰𑁆𑀯𑀭 𑀓𑀻 𑀧𑀽𑀚𑀸 𑀓𑀭𑀢𑀸 𑀳𑁃.

'उ' का शब्द प्रयोग

पुल	𑀧𑀼𑀮
मुख	𑀫𑀼𑀔
गुलाब	𑀕𑀼𑀮𑀸𑀩
साबुन	𑀲𑀸𑀩𑀼𑀦
कुटिया	𑀓𑀼𑀝𑀺𑀬𑀸
मधुर	𑀫𑀥𑀼𑀭
गुलाल	𑀕𑀼𑀮𑀸𑀮
चुपचाप	𑀘𑀼𑀧𑀘𑀸𑀧
बुलबुल	𑀩𑀼𑀮𑀩𑀼𑀮
छुरा	𑀙𑀼𑀭𑀸
कुदाल	𑀓𑀼𑀤𑀸𑀮
खुराक	𑀔𑀼𑀭𑀸𑀓
बुढिया	𑀩𑀼𑀠𑀺𑀬𑀸
जामुन	𑀚𑀸𑀫𑀼𑀦
कुसुम	𑀓𑀼𑀲𑀼𑀫
मुकुट	𑀫𑀼𑀓𑀼𑀝
यमुना	𑀬𑀫𑀼𑀦𑀸
फुलवारी	𑀨𑀼𑀮𑀯𑀸𑀭𑀻

कुसुम मुख साफ कर। फुलवारी महकी।

𑀓𑀼𑀲𑀼𑀫 𑀫𑀼𑀔 𑀲𑀸𑀨 𑀓𑀭. 𑀨𑀼𑀮𑀯𑀸𑀭𑀻 𑀫𑀳𑀓𑀻.

बुलबुल का मधुर गीत सुन।

𑀩𑀼𑀮𑀩𑀼𑀮 𑀓𑀸 𑀫𑀥𑀼𑀭 𑀕𑀻𑀢 𑀲𑀼𑀦.

साबुन लगाकर नहा। मुकुल काम कर।

𑀲𑀸𑀩𑀼𑀦 𑀮𑀕𑀸𑀓𑀭 𑀦𑀳𑀸. 𑀫𑀼𑀓𑀼𑀮 𑀓𑀸𑀫 𑀓𑀭.

'ऊ' का शब्द प्रयोग

काजू	𑀓𑀸𑀚𑀽	चूहा	𑀘𑀽𑀳𑀸
झूला	𑀛𑀽𑀮𑀸	पूजा	𑀧𑀽𑀚𑀸
आलू	𑀆𑀮𑀽	जूता	𑀚𑀽𑀢𑀸
तराजू	𑀢𑀭𑀸𑀚𑀽	नाखून	𑀦𑀸𑀔𑀽𑀦
सूरज	𑀲𑀽𑀭𑀚	सपूत	𑀲𑀧𑀽𑀢
डमरु	𑀟𑀫𑀭𑀼	मजदूर	𑀫𑀚𑀤𑀽𑀭
खजूर	𑀔𑀚𑀽𑀭	कबूतर	𑀓𑀩𑀽𑀢𑀭
तरबूज	𑀢𑀭𑀩𑀽𑀚	जादूगर	𑀚𑀸𑀤𑀽𑀕𑀭
खरबूजा	𑀔𑀭𑀩𑀽𑀚𑀸	अमरुद	𑀅𑀫𑀭𑀼𑀤

सूरज निकला। मजदूर काम पर चला।

𑀲𑀽𑀭𑀚 𑀦𑀺𑀓𑀮𑀸. 𑀫𑀚𑀤𑀽𑀭 𑀓𑀸𑀫 𑀧𑀭 𑀘𑀮𑀸.

तू गाय का दूध पी। रामू काजू खा।

𑀢𑀽 𑀕𑀸𑀬 𑀓𑀸 𑀤𑀽𑀥 𑀧𑀻. 𑀭𑀸𑀫𑀽 𑀓𑀸𑀚𑀽 𑀔𑀸.

झूला मत झूल। डमरु बजा।

𑀛𑀽𑀮𑀸 𑀫𑀢 𑀛𑀽𑀮. 𑀟𑀫𑀭𑀼 𑀩𑀚𑀸.

'ए' का शब्द प्रयोग

सेब	𑀲𑁂𑀩	केला	𑀓𑁂𑀮𑀸
पेड	𑀧𑁂𑀟	पेट	𑀧𑁂𑀝
खेल	𑀔𑁂𑀮	मेला	𑀫𑁂𑀮𑀸
एक	𑀏𑀓	खेत	𑀔𑁂𑀢
गणेश	𑀕𑀡𑁂𑀰	जलेबी	𑀚𑀮𑁂𑀩𑀻
चमेली	𑀘𑀫𑁂𑀮𑀻	करेला	𑀓𑀭𑁂𑀮𑀸
ठठेरा	𑀞𑀞𑁂𑀭𑀸	देवता	𑀤𑁂𑀯𑀢𑀸
चेहरा	𑀘𑁂𑀳𑀭𑀸	मेहमान	𑀫𑁂𑀳𑀫𑀸𑀦
रेलगाडी	𑀭𑁂𑀮𑀕𑀸𑀟𑀻	बहेलिया	𑀩𑀳𑁂𑀮𑀺𑀬𑀸

बेला केला खा। चमेली का एक फूल ला।

𑀩𑁂𑀮𑀸 𑀓𑁂𑀮𑀸 𑀔𑀸. 𑀘𑀫𑁂𑀮𑀻 𑀓𑀸 𑀏𑀓 𑀨𑀽𑀮 𑀮𑀸.

मेहमान के साथ मेला देखने जा।

𑀫𑁂𑀳𑀫𑀸𑀦 𑀓𑁂 𑀲𑀸𑀣 𑀫𑁂𑀮𑀸 𑀤𑁂𑀔𑀦𑁂 𑀚𑀸.

सेब ला। पेड पर मत चढ

𑀲𑁂𑀩 𑀮𑀸. 𑀧𑁂𑀟 𑀧𑀭 𑀫𑀢 𑀘𑀠.

‘ऐ’ का शब्द प्रयोग

नैया	𑀦𑁃𑀬𑀸	सैर	𑀲𑁃𑀭
थैला	𑀣𑁃𑀮𑀸	पैर	𑀧𑁃𑀭
पैसा	𑀧𑁃𑀲𑀸	बैल	𑀩𑁃𑀮
मैना	𑀫𑁃𑀦𑀸	मैदान	𑀫𑁃𑀤𑀸𑀦
दैनिक	𑀤𑁃𑀦𑀺𑀓	सैनिक	𑀲𑁃𑀦𑀺𑀓
गवैया	𑀕𑀯𑁃𑀬𑀸	पैदल	𑀧𑁃𑀤𑀮
वैशाख़	𑀯𑁃𑀰𑀸𑀔	तैराक	𑀢𑁃𑀭𑀸𑀓
तैयार	𑀢𑁃𑀬𑀸𑀭	बैलगाडी	𑀩𑁃𑀮𑀕𑀸𑀟𑀻
नैनीताल	𑀦𑁃𑀦𑀻𑀢𑀸𑀮	ऐरावत	𑀐𑀭𑀸𑀯𑀢

नैया पानी में तैरती है।

𑀦𑁃𑀬𑀸 𑀧𑀸𑀦𑀻 𑀫𑁂𑀁 𑀢𑁃𑀭𑀢𑀻 𑀳𑁃.

रमेश दैनिक पत्र पढता है।

𑀭𑀫𑁂𑀰 𑀤𑁃𑀦𑀺𑀓 𑀧𑀢𑁆𑀭 𑀧𑀠𑀢𑀸 𑀳𑁃.

भैरव सैर करने गया। गवैया गाता है।

𑀪𑁃𑀭𑀯 𑀲𑁃𑀭 𑀓𑀭𑀦𑁂 𑀕𑀬𑀸. 𑀕𑀯𑁃𑀬𑀸 𑀕𑀸𑀢𑀸 𑀳𑁃.

‘ओ’ का शब्द प्रयोग

मोर	𑀫𑁄𑀭
शोर	𑀰𑁄𑀭
होली	𑀳𑁄𑀮𑀻
ढोलक	𑀠𑁄𑀮𑀓
टोकरी	𑀝𑁄𑀓𑀭𑀻
भोजन	𑀪𑁄𑀚𑀦
लोक	𑀮𑁄𑀓
मनोहर	𑀫𑀦𑁄𑀳𑀭
सोम	𑀲𑁄𑀫
गोल	𑀕𑁄𑀮
घोडा	𑀖𑁄𑀟𑀸
ओम	𑀑𑀫
कोमल	𑀓𑁄𑀫𑀮
समोसा	𑀲𑀫𑁄𑀲𑀸
बोतल	𑀩𑁄𑀢𑀮
कोयल	𑀓𑁄𑀬𑀮
खरगोश	𑀔𑀭𑀕𑁄𑀰
दोपहर	𑀤𑁄𑀧𑀳𑀭

मोहन टोकरी उठाओ। ढोलक बजाओ।

𑀫𑁄𑀳𑀦 𑀝𑁄𑀓𑀭𑀻 𑀉𑀞𑀸𑀑. 𑀠𑁄𑀮𑀓 𑀩𑀚𑀸𑀑.

शोर मत मचाओ। सोहन बादाम खाओ।

𑀰𑁄𑀭 𑀫𑀢 𑀫𑀘𑀸𑀑. 𑀲𑁄𑀳𑀦 𑀩𑀸𑀤𑀸𑀫 𑀔𑀸𑀑.

मनोहर दोपहर हो गई।

𑀫𑀦𑁄𑀳𑀭 𑀤𑁄𑀧𑀳𑀭 𑀳𑁄 𑀕𑀈.

‘औ’ का शब्द प्रयोग

नौका	𑀦𑁅𑀓𑀸	फौज	𑀨𑁅𑀚
कौआ	𑀓𑁅𑀆	सौदा	𑀲𑁅𑀤𑀸
पौधा	𑀧𑁅𑀥𑀸	लौकी	𑀮𑁅𑀓𑀻
शौक	𑀰𑁅𑀓	और	𑀒𑀭
औजार	𑀒𑀚𑀸𑀭	खिलौना	𑀔𑀺𑀮𑁅𑀦𑀸
कचौडी	𑀓𑀘𑁅𑀟𑀻	हथौडी	𑀳𑀣𑁅𑀟𑀻
औषधि	𑀒𑀱𑀥𑀺	मौसम	𑀫𑁅𑀲𑀫
तौलिया	𑀢𑁅𑀮𑀺𑀬𑀸	चौराहा	𑀘𑁅𑀭𑀸𑀳𑀸
सौदागर	𑀲𑁅𑀤𑀸𑀕𑀭	चौकीदार	𑀘𑁅𑀓𑀻𑀤𑀸𑀭

कौआ उड गया। गौतम और दौलत दौडे।

𑀓𑁅𑀆 𑀉𑀟 𑀕𑀬𑀸. 𑀕𑁅𑀢𑀫 𑀒𑀭 𑀤𑁅𑀮𑀢 𑀤𑁅𑀟𑁂.

रौनक का खिलौना टूट गया।

𑀭𑁅𑀦𑀓 𑀓𑀸 𑀔𑀺𑀮𑁅𑀦𑀸 𑀝𑀽𑀝 𑀕𑀬𑀸.

नौकर औषधि लाया। चौकीदार लौट आया।

𑀦𑁅𑀓𑀭 𑀒𑀱𑀥𑀺 𑀮𑀸𑀬𑀸. 𑀘𑁅𑀓𑀻𑀤𑀸𑀭 𑀮𑁅𑀝 𑀆𑀬𑀸.

‘अं’ का शब्द प्रयोग

झंडा	𑀛𑀁𑀟𑀸	लंका	𑀮𑀁𑀓𑀸
हंस	𑀳𑀁𑀲	गंगा	𑀕𑀁𑀕𑀸
रंग	𑀭𑀁𑀕	शंख	𑀰𑀁𑀔
कंगन	𑀓𑀁𑀕𑀦	जंगल	𑀚𑀁𑀕𑀮
अनंत	𑀅𑀦𑀁𑀢	मंगल	𑀫𑀁𑀕𑀮
बंदर	𑀩𑀁𑀤𑀭	चंदन	𑀘𑀁𑀤𑀦
पतंग	𑀧𑀢𑀁𑀕	शंकर	𑀰𑀁𑀓𑀭
नंदलाल	𑀦𑀁𑀤𑀮𑀸𑀮	मोरपंख	𑀫𑁄𑀭𑀧𑀁𑀔
पंचायत	𑀧𑀁𑀘𑀸𑀬𑀢	मनोरंजन	𑀫𑀦𑁄𑀭𑀁𑀚𑀦

नंदन घंटा बजाओ। गंगा बहती है।

𑀦𑀁𑀤𑀦 𑀖𑀁𑀝𑀸 𑀩𑀚𑀸𑀑. 𑀕𑀁𑀕𑀸 𑀩𑀳𑀢𑀻 𑀳𑁃.

नंदलाल मोरपंख का मुकुट पहनते हैं।

𑀦𑀁𑀤𑀮𑀸𑀮 𑀫𑁄𑀭𑀧𑀁𑀔 𑀓𑀸 𑀫𑀼𑀓𑀼𑀝 𑀧𑀳𑀦𑀢𑁂 𑀳𑁃𑀁.

बंदर अंगूर खाता है। रंजन पतंग उडाता है।

𑀩𑀁𑀤𑀭 𑀅𑀁𑀕𑀽𑀭 𑀔𑀸𑀢𑀸 𑀳𑁃. 𑀭𑀁𑀚𑀦 𑀧𑀢𑀁𑀕 𑀉𑀟𑀸𑀢𑀸 𑀳𑁃.

कपडे 𑀓𑀧𑀟𑁂

 शर्ट 𑀰𑀭𑁆𑀝 | साडी 𑀲𑀸𑀟𑀻 

 पेंट 𑀧𑁂𑀁𑀝 | घाघरा 𑀖𑀸𑀖𑀭𑀸 

बर्तन 𑀩𑀭𑁆𑀢𑀦

 थाली 𑀣𑀸𑀮𑀻 | लोटा 𑀮𑁄𑀝𑀸 

 गिलास 𑀕𑀺𑀮𑀸𑀲 | चम्मच 𑀘𑀫𑁆𑀫𑀘 

खिलौना 𑀔𑀺𑀮𑁅𑀦𑀸

 गेंद 𑀕𑁂𑀁𑀤 | गुब्बारे 𑀕𑀼𑀩𑁆𑀩𑀸𑀭𑁂 

 झुनझुना 𑀛𑀼𑀦𑀛𑀼𑀦𑀸 | गुडिया 𑀕𑀼𑀟𑀺𑀬𑀸 

मिठाई 𑀫𑀺𑀞𑀸𑀈

 लड्डू 𑀮𑀟𑁆𑀟𑀽 | पेडा 𑀧𑁂𑀟𑀸 

 जलेबी 𑀚𑀮𑁂𑀩𑀻 | बालूशाही 𑀩𑀸𑀮𑀽𑀰𑀸𑀳𑀻 

वाहन 𑀯𑀸𑀳𑀦

 बैलगाडी 𑀩𑁃𑀮𑀕𑀸𑀟𑀻 | स्कूटर 𑀲𑁆𑀓𑀽𑀝𑀭 

 रेलगाडी 𑀭𑁂𑀮𑀕𑀸𑀟𑀻 | साइकिल 𑀲𑀸𑀇𑀓𑀺𑀮 

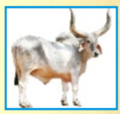
पक्षी 𑀧𑀓𑁆𑀱𑀻

 चिडिया 𑀘𑀺𑀟𑀺𑀬𑀸 | मोर 𑀫𑁄𑀭 

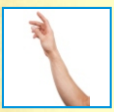
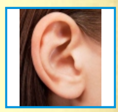
 कबूतर 𑀓𑀩𑀽𑀢𑀭 | बतक 𑀩𑀢𑀓 

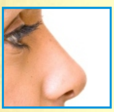
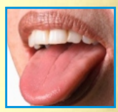
पालतू जानवर 𑀧𑀸𑀮𑀢𑀽 𑀚𑀸𑀦𑀯𑀭

 बिल्ली 𑀩𑀺𑀮𑁆𑀮𑀻 | खरगोश 𑀔𑀭𑀕𑁄𑀰 

 बकरी 𑀩𑀓𑀭𑀻 | बैल 𑀩𑁃𑀮 

शरीर के अवयव 𑀰𑀭𑀻𑀭 𑀓𑁂 𑀅𑀯𑀬𑀯

 हाथ 𑀳𑀸𑀣 | कान 𑀓𑀸𑀦 

 नाक 𑀦𑀸𑀓 | जीभ 𑀚𑀻𑀪 

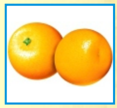
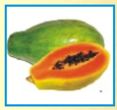
फूल 𑀨𑀽𑀮

	गुलाब	𑀕𑀼𑀮𑀸𑀩	मोगरा	𑀫𑁄𑀕𑀭𑀸	
	कमल	𑀓𑀫𑀮	गेंदा	𑀕𑁂𑀁𑀤𑀸	

सब्जी 𑀲𑀩𑁆𑀚𑀻

	मिरची	𑀫𑀺𑀭𑀘𑀻	बैंगन	𑀩𑁃𑀁𑀕𑀦	
	करेला	𑀓𑀭𑁂𑀮𑀸	भिंडी	𑀪𑀺𑀁𑀟𑀻	

फल 𑀨𑀮

	आम	𑀆𑀫	संतरा	𑀲𑀁𑀢𑀭𑀸	
	केला	𑀓𑁂𑀮𑀸	पपीता	𑀧𑀧𑀻𑀢𑀸	

वार	𑀯𑀸𑀭	गुरुवार	𑀕𑀼𑀭𑀼𑀯𑀸𑀭
सोमवार	𑀲𑁄𑀫𑀯𑀸𑀭	शुक्रवार	𑀰𑀼𑀓𑁆𑀭𑀯𑀸𑀭
मंगलवार	𑀫𑀁𑀕𑀮𑀯𑀸𑀭	शनिवार	𑀰𑀦𑀺𑀯𑀸𑀭
बुधवार	𑀩𑀼𑀥𑀯𑀸𑀭	रविवार	𑀭𑀯𑀺𑀯𑀸𑀭

लिपिविकास-तालिका



लिच्छविपूर्व PreLicch. Period
लिच्छवि काल Licchavi Period
एवं शाह काल
ब्राह्मी Bramhi
पूर्व लि. ProLic.
पोस्ट लि. PostLic.
किरात Kirat
रंजना Ranjana
भूजिमो Bhujimo
नेवारी Newari
मैथिली Maithili
तिब्बती Tibetan
नंदीनागरी Nandingr.
देवनागरी Devngr.
अ
आ
इ
ई
उ
ऊ
ऋ
ॠ
ऌ
ॡ
ए
ऐ
ओ
औ
अं
अः

लिपिविकास-तालिका


लिच्छविपूर्व PreLicch. Period
लिच्छवि काल Licchavi Period
एवं शाह काल
ब्राह्मी Bramhi
पूर्व लि. ProLic.
पोस्ट लि. PostLic.
किरात Kirat
रंजना Ranjana
भूजिमो Bhujimo
नेवारी Newari
मैथिली Maithili
तिब्बती Tibetan
नंदीनागरी Nandingr.
देवनागरी Devngr.
क
ख
ग
घ
ङ
च
छ
ज
झ
ञ
ट
ठ
ड
ढ
ण
त

लिपिविकास-तालिका

लिच्छविपूर्व PreLicch. Period	लिच्छवि काल Licchavi Period		एवं शाह काल							
ब्राह्मी Bramhi	पूर्व लि. ProLic.	पोस्ट लि. PostLic.	किरात Kirat	रंजना Ranjana	भूजिमो Bhujimo	नेवारी Newari	मैथिली Maithili	तिब्बती Tibetan	नंदीनागरी Nandingr.	देवनागरी Devngr.



लिपिविकास-तालिका

लिच्छविपूर्व PreLicch. Period	लिच्छवि काल Licchavi Period		एवं शाह काल							
ब्राह्मी Bramhi	पूर्व लि. ProLic.	पोस्ट लि. PostLic.	किरात Kirat	रंजना Ranjana	भूजिमो Bhujimo	नेवारी Newari	मैथिली Maithili	तिब्बती Tibetan	नंदीनागरी Nandingr.	देवनागरी Devngr.





Period	Script
लिच्छविपूर्व PreLicch. Period	ब्राह्मी Bramhi
लिच्छवि काल Licchavi Period	पूर्व लि. ProLic.
	पोस्ट लि.PostLic.
एवं शाहकाल	किरात Kirat
	रंजना Ranjana
	भुजिमो Bhujimo
	नेवारी Newari
	मैथिली Maithili
	तिब्बती Tibetan
	नंदीनागरी Nandingr.
	देवनागरी Devnagari: १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

राष्ट्रगान

जन गण मन अधिनायक जय हे भारत भाग्य विधाता
𑀚𑀦 𑀕𑀡 𑀫𑀦 𑀅𑀥𑀺𑀦𑀸𑀬𑀓 𑀚𑀬 𑀳𑁂 𑀪𑀸𑀭𑀢 𑀪𑀸𑀕𑁆𑀬 𑀯𑀺𑀥𑀸𑀢𑀸
Jan gan man adhinayak jay hai bharat bhagya vidhata

पंजाब सिंध गुजरात मराठा द्राविड उत्कल वंग
𑀧𑀁𑀚𑀸𑀩 𑀲𑀺𑀁𑀥 𑀕𑀼𑀚𑀭𑀸𑀢 𑀫𑀭𑀸𑀞𑀸 𑀤𑁆𑀭𑀸𑀯𑀺𑀟 𑀉𑀢𑁆𑀓𑀮 𑀯𑀁𑀕
Panjab Sindh Gujrat Maratha Dravid Utkal Vang

विंध्य हिमाचल यमुना गंगा उच्छल जलधि तरंग
𑀯𑀺𑀁𑀥𑁆𑀬 𑀳𑀺𑀫𑀸𑀘𑀮 𑀬𑀫𑀼𑀦𑀸 𑀕𑀁𑀕𑀸 𑀉𑀘𑁆𑀙𑀮 𑀚𑀮𑀥𑀺 𑀢𑀭𑀁𑀕
Vindya himachal yamuna ganga Uchhal Jaldhi Tarang

तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मागे
𑀢𑀯 𑀰𑀼𑀪 𑀦𑀸𑀫𑁂 𑀚𑀸𑀕𑁂 𑀢𑀯 𑀰𑀼𑀪 𑀆𑀰𑀺𑀱 𑀫𑀸𑀕𑁂
Tav shubh name jage Tav shubh ashish mage

गाये तव जय गाथा
𑀕𑀸𑀬𑁂 𑀢𑀯 𑀚𑀬 𑀕𑀸𑀣𑀸
Gaye tav jai gatha

जन गण मन अधिनायक जय हे भारत भाग्य विधाता
𑀚𑀦 𑀕𑀡 𑀫𑀦 𑀅𑀥𑀺𑀦𑀸𑀬𑀓 𑀚𑀬 𑀳𑁂 𑀪𑀸𑀭𑀢 𑀪𑀸𑀕𑁆𑀬 𑀯𑀺𑀥𑀸𑀢𑀸
Jan gan man adhinayak jay hai bharat bhagya vidhata

जय हे जय हे जय हे जय, जय, जय, जय हे,
𑀚𑀬 𑀳𑁂 𑀚𑀬 𑀳𑁂 𑀚𑀬 𑀳𑁂 𑀚𑀬 𑀚𑀬 𑀚𑀬 𑀚𑀬 𑀳𑁂
Jay hai, Jay hai, Jay hai, Jay, Jay, Jay, Jay hai,





आचार्यश्री से आशीर्वाद लेते हुए गुजरात के मुख्यमंत्री माननीय विजयभाई रुपाणी
और गुजरात के पूर्व राज्यपाल महामहीम श्री ओ. पी. कोहली ।





आचार्यश्री सुनील सागर जी महाराज को राष्ट्रसंत अलंकरण से अलंकृत
करते हुए राजस्थान के मुख्यमंत्री माननीय अशोक जी गहलोत





आचार्यश्री सुनील सागर जी के ४३ वें अवतरण दिवस पर ६ अक्टुबर २०१९ को
हुम्मडपुरम सागवाड़ा में आचार्यश्री की जीवन गाथा कृति ''महाविज्ञ'' का
विमोचन राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोकजी गहलोत, विधानसभा
अध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी, मंत्री राजेन्द्र यादव, मंत्री उदयलाल आंजना, मंत्री अर्जुन मीणा
व अन्य जनप्रतिनिधिगण साथ में कृति की लेखिका सरोज शाह (इंदौर) भी है ।

लिपि कला एक श्रेष्ठ कला है। प्रमुख भारतीय लिपियों की जननी ब्राह्मी का अपना एक ऐतिहासिक महत्त्व है। आज भी ब्राह्मी लिपि में लिखित अनेक शिलालेख प्राप्त होते है। इन सबका अध्ययन हो इस हेतु लिपि विकास तालिका, ब्राह्मी लिपि का प्रामाणिक रुप एवं इसके साथ अन्य आधुनिक लिपियों का तुलनात्मक स्वरुप तथा ब्राह्मी लिपि में स्वर, व्यंजन एवं उसके शब्द स्वरूप इस पुस्तिका में देने का प्रयास किया है।



ऋषभदेव अपनी कन्या ब्राह्मी को लिपी एवं
कन्या सुंदरी को अंकगणित का अध्ययन कराते हुए।

आओ सीखें

ब्राह्मी लिपी

भारतीय ज्ञानपीठ

18, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नयी दिल्ली - 110 003

संस्थापक : स्व. साहू शान्तिप्रसाद जैन, स्व. श्रीमती रमा जैन